5 सितंबर 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

लोक जागरण का महापर्व

गणेशोत्सव का प्रारंभ लोकमान्य तिलक जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीयों की चेतना को जागृत करने और समाज को संगठित करने के लिए किया था, गणेशोत्सव आज भी समाज को संगठित करने का महापर्व है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

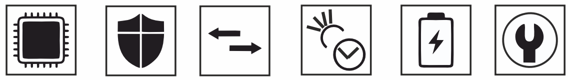

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

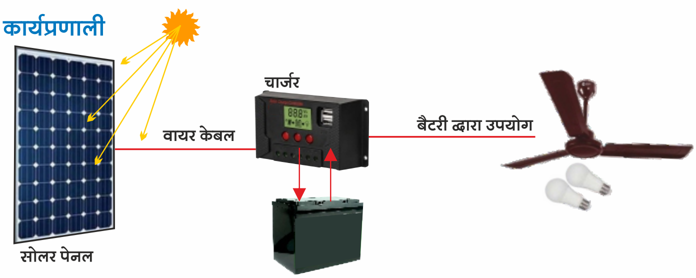

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 सितम्बर, 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 03
•••
सावन / कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारत एक त्यौहार प्रधान राष्ट्र है। वैसे तो हर मास में कोई छोटा या बड़ा त्यौहार होता है किन्तु भादवमास विशेष त्यौहारों का माह है। यह महीना व्रत उपवास नियम एवं निष्ठा का सभी लोगों को पालन करवाता है। इस माह में हरतालिका तीज, गणेश चतुर्थी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, ऋषि पंचमी, गोगावीर नवमी, डोलग्यारस, अनंत चतुर्दशी, कजरीतीज, राधाअष्टमी इसके अलावा भी त्यौहार होते हैं जो हमारे मालवा और निमाड़ में बड़ी आस्था से मनाए जाते हैं।

भादव मास में जितने भी त्यौहार है सभी किसी विशेष प्रसंग से जुड़े है सबका अपना-अपना विशेष महत्व है इस माह में वीर गोगा देव का भी अवतार हुआ था इसके संबंध में हम सबको अवश्य जानना चाहिये। लोक देवता गोगा देव जी नागराज का अवतार है। गोगा देव की पूजा भादव महीने में शुरू होती है और नौवें दिन उनके प्रतीक नाग की पूजा करते हैं। गोगा देव के रूप में छड़ी को गांव-नगर में घुमाई जाती है। सभी लोग आस्था और श्रद्धा से छड़ी पूजन करते हैं। गोगा देवजी का जीवन हम सभी के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी है।

गणेश चतुर्थी से लेकर अनन्त चतुर्दशी तक गणेशोत्सव पूरे मालवा और निमाड़ में ही नही पूरे भारत में बहुत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। स्वतंत्रता के आन्दोलन में यह त्यौहार समस्त देशवासियों को जोड़ने का एक प्रभावी माध्यम बना था।

हरतालिका तीज अपनी माता बहनों के लिए अत्यन्त श्रद्धा एवं आस्था से परिपूर्ण त्यौहार है। इस दिन माता-बहन भगवान शिव-पार्वती का पूजन निराहार रहकर करती हैं। इसी के साथ ऋषि पंचमी, हल अष्टमी का पूजन भी श्रद्धा भाव से करती हैं। साथ ही तेजादशमी एवं डोलग्यारस को डोल की पूजा की जाती है। हमारी भारतीय संस्कृति में त्यौहार शान्ति और सद्भाव के साथ परम्परा और खुशी मनाने के विशेष दिन हैं। उत्सव के ये दिन हमारे सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। त्यौहार हमें अपनी संस्कृति और धर्म को अपनाने में विशेष महत्व रखते हैं। त्यौहार हमारे जीवन में समरसता लाते हैं। आइये हम अपने सभी त्यौहार मिल-जुलकर हर्ष और उल्लास के साथ मनायें।

मंगलमय शुभकामनाएं

भाद्रपद मास का सात दिवसीय अनुष्ठान

डॉ. सोनाली नरगुन्दे

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को हस्त नक्षत्र के दिन कुमारिकाएं और सौभाग्यवती महिलाएं भगवान शिव और गौरी की आराधना करती हैं। भारत के अधिकांश भागों में हरितालिका तीज को बड़े उत्साह से मनाया जाता है। भगवान शिवशंकर जैसा वर प्राप्त करने और पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत किया जाता है। केले का मंडप बनाकर गौरीशंकर की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है। भगवान को नाना प्रकार की पत्तियां और फूल अर्पित किए जाते हैं। यदि इसकी प्रासंगिकता समझें तो माता गौरी ने हिमालय पर शिवजी को पाने के लिए तपस्या की। उस समय वहां पर जो उपलब्ध था वही उन्होंने अर्पित किया और स्वयं भी ग्रहण किया। इसी प्रकार भजन कीर्तन के साथ दिनभर उल्लास का वातावरण बना रहता है। मालवा क्षेत्र में हरितालिका का महत्व है और इंदौर नगर में तो रात्रि जागरण का आनंद दर्शनीय है। इंदौर की महिलाएं एकत्रित होकर राजबाड़ा क्षेत्र में आती हैं और रातभर नृत्य, संगीत और भक्ति का वातावरण बना रहता है।

सभी भारतीय व्रत और परंपराएं बहुत ही वैज्ञानिक पद्धति के साथ निर्धारित की गई हैं। प्रकृति से एकात्मकता के कारण यह व्रत अत्यंत प्रासंगिक है। कालांतर में इसका स्वरूप दूसरे लोगों ने खराब कर दिया और इनकी वास्तविकता को भुला दिया। इसका वैज्ञानिक कारण प्रकृति और वातावरण से जुड़ा है। सावन में निरंतर बारिश के कारण लोगों को एक जैसे मौसम के कारण लगातार घरों में बंद रहना पड़ता है। ऐसे में थोड़ा मौसम खुलते ही उन्हें स्वच्छ आक्सीजन का आनंद लेने के लिए बाहर निकलना और लोगों से मिलने-जुलने का अवसर मिले। खासतौर से औरतों के लिए, जो घरों में ही कार्य करती हैं, यह व्रत त्यौहार उनके लिए अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं। इस कारण वे बाहर की स्वच्छ प्रकृति और हवा का आनंद ले सकती हैं। इसी दिन के बाद मिलने जुलने का बड़ा पर्व गणेश चतुर्थी आता है। इसका धार्मिक और पौराणिक महत्व तो है ही लेकिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इस दिन का उपयोग राष्ट्रीयता और सामाजिक एकता के लिए किया। उन्होंने इस धार्मिक कार्यक्रम को देशव्यापी आंदोलन की तरह अपनाने की सलाह दी। लोगों में एकजुटता और अखंडता की अलख के लिए दस दिनी गणेशोत्सव को मनाया जाने लगा। भादों की चतुर्थी को भगवान श्री गणेश का जन्मदिन आता है। इसी के साथ एक अन्य कथा भी जुड़ी है कि वेदव्यास महाभारत की कथा रचने लगे तो उनके लेखक की भूमिका गणेश जी ने निभाई। लेकिन उनकी एक शर्त थी कि लगातार लिखूंगा। तो चतुर्थी के दिन से व्यास जी ने कथा प्रारंभ की तो गणेशजी का लिखना अनंत चतुर्दशी पर समाप्त हुआ। परंतु ऐसा करने में उनका संपूर्ण शरीर तप्त और जेवत हो गया। उनके शरीर पर धूल मिट्टी की परत जम गई। इस कारण चौदस के दिन उन्हें पानी में विसर्जित करने की परंपरा पड़ी।

भादो की शुक्ल पंचमी को ऋषि पंचमी व्रत किया जाता है। ब्रह्मपुराण के अनुसार सभी स्त्रियां यह व्रत कर सकती हैं। प्रकृति के और समीप जाने को संकल्पित यह व्रत सभी पेड़-पौधों से प्रेम का पाठ देता है। जड़ी-बूटी के साथ नदियों में स्नान का यह दिन स्वयं की चेतना का दिवस है। आधुनिक विज्ञान ही नहीं हमारे पुराणों में मानवीय चेतना का अध्ययन और मनन किया गया। इस कारण हमारे मुनियों ने **यत् ब्रम्हांडे तत् पिंडे** जैसी अवधारणा को रखा। उनका यह कहना था कि हमारे तन और मन की चेतना का मनन आवश्यक है। वेदों में इस तरह के अनुसंधान और उसके निष्कर्षों का सार सूत्र संचित है। चारों वेदों में बीस हजार से ज्यादा मंत्र हैं। इन्हें गाया और

रचा है सात ऋषियों और उनकी कुल परंपरा में हुए अन्य ब्रह्मवेत्ताओं ने। इस कुल परंपरा का आरंभ मूलतः सात ऋषियों से होता है। उन सात ऋषियों के नाम हैं वसिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, अत्रि, भारद्वाज, वामदेव और शौनक। उन दिनों जब दिशा बताने वाले यंत्र नहीं थे, तब समुद्री यात्रा के समय दिन में सूर्य और रात में ध्रुव तारे या सात ऋषियों के नाम से विख्यात तारामंडल से दिशा की पहचान की जाती थी। राजा दशरथ के कुलगुरु ब्रह्मर्षि वसिष्ठ सप्तर्षि मंडल के प्रथम सदस्य हैं। उन्होंने सरस्वती नदी के किनारे ऋग्वेद के सौ सूक्तों की रचना की थी। ऋषि होने से पहले विश्वामित्र विश्वरथ नाम के राजा थे। कामधेनु गाय के लिए उनका ऋषि वसिष्ठ से युद्ध भी हुआ, लेकिन वह हार गए। हार ने उन्हें ऋषि विश्वामित्र बना दिया। अपनी तपस्या के बल पर उन्होंने त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेज दिया। तीसरे ऋषि कण्व ऋग्वेद के 103 सूक्त वाले आठवें मंडल के मंत्रों के रचयिता माने जाते हैं। उन्हीं ऋषि कण्व ने सोमयज्ञ की परंपरा शुरू की। राजा दुष्यंत की पत्नी शकुंतला और पुत्र भरत का पालन-पोषण इन्हीं के आश्रम में हुआ। ऋषि भारद्वाज देवगुरु बृहस्पति के पुत्र थे। ऋग्वेद के छठे मंडल के द्रष्टा भारद्वाज ऋषि हैं। उन्होंने 765 मंत्रों का साक्षात्कार किया। अथर्ववेद में भी 23 मंत्र इन्हीं के हैं। पंचम मंडल के द्रष्टा महर्षि अत्रि ने कृषि के विकास में योगदान दिया था। कहते हैं कि अग्नि पूजकों के धर्म का सूत्रपात अत्रि से ही हुआ। वामदेव ने सामगान अर्थात संगीतबद्ध किया। वह ऋग्वेद के चौथे मंडल के सूत्र द्रष्टा और जन्मत्रयी के तत्ववेत्ता माने जाते हैं। भरत मुनि के लिखे भरत नाट्यशास्त्र सामवेद से ही प्रेरित हैं। सामवेद में संगीत और वाद्य यंत्रों की संपूर्ण जानकारी मिलती है। ऋषि शौनक ने दस हजार विद्यार्थियों का गुरुकुल चलाकर कुलपति का सम्मान हासिल किया। इन विभूतियों के अलावा उपनिषद काल में अगस्त्य, अष्टावक्र, याज्ञवल्क्य, कश्यप, कात्यायन, ऐतरेय, कपिल, जैमिनी, गौतम, व्यास, चरक, सुश्रुत, जमदग्नि, याज्ञवल्क्य और नारद जैसे ऋषियों ने मनुष्य और विश्व वसुंधरा को गौरव गरिमा दी। संसार की विभिन्न विद्याओं की खोज और उनके माध्यम से एक जागृत, जीवंत व विकसित धर्म-परंपरा की संरचना इन महान ऋषियों की बदौलत ही पूरी हो सकी। वैदिक वांग्मय में ज्ञान का सागर भरकर इन मंत्र द्रष्टा ऋषियों ने समूची मानव जाति का जो कल्याण किया है, उससे हम सब कभी उऋण नहीं हो सकते। उनके उपकारों का स्मरण करते हुए हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को ऋषि पंचमी का पर्व मनाकर नमन-वंदन करते हैं। पिता के ऋण से उऋण हुआ जा सकता है। उनकी वंश परंपरा आगे बढ़ाने के साथ ही उनके दायित्वों को पूरा कर लोग उऋण होते ही हैं। लेकिन ऋषि ऋण के बाबत कितने लोग ध्यान देते हैं? इस ऋण से उऋण होने का एक ही उपाय है कि उनकी विरासत अर्थात ज्ञान परंपरा और संस्कृति साधना को दिनों-दिन बढ़ाया और समृद्ध किया जाए।

इसके बाद आने वाली षष्ठी को कुछ लोग हलछठ के रूप में मनाते हैं। परंतु मालवा और आसपास के क्षेत्रों में इसे मौर सिराई छठ के रूप में मनाते हैं। मौर सिराई के अर्थ से बहुत से लोग अपरिचित होंगे। हमारे मालवा में कुछ समुदायों में विवाह संस्कार में वर और वधु दोनों के सिरों पर मोर बांधे जाते हैं। यह विवाह संस्कार के पश्चात निकाल कर रख दिए जाते हैं। उन मोरों को सिराने के लिए इस दिन को खास तौर पर अच्छा माना जाता है। हलछठ को लोग हल से उत्पन्न अन्न को ग्रहण नहीं करते। कृष्ण पक्ष में आने वाली छठ को कुछ लोग भगवान बलराम के जन्म का दिन मनाते हैं कुछ शुक्ल पक्ष की छठ को। परंतु संपूर्ण उत्तर भारत में कृष्ण पक्ष की छठ को बलराम के जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। उनके प्रिय हल की पूजा की जाती है।

संतान का कल्याण हो - भादो मास की ही शुक्ल पक्ष की सप्तमी को संतान सप्तमी या अनंत सप्तमी के नाम से जाना जाता है। भविष्य पुराण के अनुसार यह तिथि भगवान सूर्य को समर्पित है। सप्तमी तिथि के दिन भगवान सूर्य की पूजा करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार संतान को दीर्घ आयुष्य प्राप्त होता है। इस दिन भगवान सूर्य की अष्टदल बनाकर पूजा की जाती है। लाल फूल के साथ उन्हें आटे और घी का प्रसाद बनाकर अर्पित किया जाता है। इस व्रत से संतान सुख के साथ संतान के आरोग्य में वृद्धि तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। इस व्रत के बारे में कहा जाता है कि इसकी कथा श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को सुनाई। उन्होंने कहा कि माता देवकी ने संतान सप्तमी में सूर्य की उपासना की तभी मेरा जन्म हुआ। कंस के आतंक से जनता को मुक्ति मेरे जन्म के बाद मिली।

देवी अहिल्याबाई होलकर : धर्म और अध्यात्म में योगदान

प्रशंसा तिवारी

अहिल्यादेवी होलकर (31 मई 1725/13 अगस्त 1795) मराठा साम्राज्य की एक महिला शासक तथा सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खण्डेराव की धर्मपत्नी थीं। उन्होंने महेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया। वैसे तो अहिल्या बाई की प्रसिद्धि देशभर में फैली हुई ही है, हम सभी उनके जन्मस्थल, जीविका एवं शासनकाल से भलीभांति अवगत हैं। जहाँ बात देवी अहिल्याबाई को एक नए नजरिए से देखने की आती है तो शासन करने के अलावा उनकी प्रजा को लेकर उनके कई योगदान रहे हैं। भारत जैसे सांस्कृतिक देश में जहाँ भगवानों और भगवानों की पूजा- अर्चना हेतु बनाए गए स्थलों की विशेष मान्यता है। अनेक धार्मिक स्थलों की भूमि **भारत** जब अपने इस नाम से भी परिचित नहीं हुआ था, तब से ही इस भूमि पर मंदिरों का निर्माण, खण्डन एवं पुनर्निर्माण चला आया है। किसी मंदिर के खण्डन के बाद भक्तों की आस्था को खण्डित होने से बचाने के लिए देवी अहिल्या बाई द्वारा अनेक मंदिरों का पुनर्निर्माण हुआ।

परम शिवभक्त एवं वीरांगना देवी अहिल्याबाई होलकर के द्वारा कई मंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ। उनमें से बारह ज्योतिर्लिंगों में से काशी और काठेवाड़ा में स्थित विश्वनाथ एवं सोमनाथ मंदिर भी पुनर्निर्मित मंदिरों की सूची के अंग हैं। इनके अतिरिक्त, गया में स्थित विष्णुपद मंदिर, परली का वैधनाथ मंदिर और वेरळ - एलोरा का श्री घृष्णेश्वर मंदिर उन प्रसिद्ध मंदिरों में से है जिनका जीर्णोद्धार कर अहिल्याबाई ने आस्था के संचार में बढ़ोत्तरी की है। इतिहासकारों की माने तो सोमनाथ मंदिर 17 बार नष्ट किया गया था। सन् 1024 में अफगानिस्तान के गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने जब सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया, तब इसके तकरीबन 750 साल बाद 1783 में अहिल्याबाई ने पुणे के पेशवा के साथ मिलकर ध्वस्त मंदिर के पास अलग मंदिर का निर्माण कराया। आज जब हर वर्ष काशी विश्वनाथ अपनी एक अलग चमक देशभर में बिखेरता है तो वहीं इस चकाचौंध का इतिहास सन् 1780 में लिखा गया था जब मल्हार राव की बहू अहिल्याबाई नें मस्जिद के बगल में वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। अहिल्याबाई को विष्णुपद मंदिर की अधिष्ठात्री भी कहा जाता है। इसी प्रकार उन्होंने पूरे भारत में 65 मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। धर्मशालाओं की बात की जाए तो देवी अहिल्याबाई द्वारा निर्मित धर्मशालाएं बद्रीनारायण, मथुरा, हरिद्वार, रामेश्वर, अमरकंटक, नासिक (सप्तश्रृंगी देवी मंदिर), प्रयाग, अयोध्या, भरतपुर-तेहरी (बुंदेलखंड) आदि धार्मिक स्थलों में स्थित है। ऐसे स्थलों पर जहाँ आए दिन तीर्थयात्रियों का आना जाना लगा रहता है, यह धर्मशालाएं प्राचीन काल से अत्यन्त कम शुल्क में तीर्थयात्रियों को ठहराने के काम आती हैं। इसके अतिरिक्त अहिल्याबाई द्वारा कई तालाबों का निर्माण हुआ जिनमें से प्रमुख है - जेजुरी में गौतमेश्वर मंदिर के पास बना तालाब, महेश्वर के राजराजेश्वर मंदिर के पास बना बारह मासी नंदादीप व्यवस्था प्रदान करने वाला तालाब एवं (निजाम राज्य) आपेगांव श्री ज्ञानेश्वर में निर्मित तालाब। कई कुएँ और बावड़ियों के निर्माण में भी अहिल्याबाई का नाम सम्मान से लिया जाता है। शंभू महादेव, नाथद्वारा, निमगांव (नासिक), पिपळगांव (नासिक), साकरगांव (ता. निफाड़),ओझर (जिला अहमनगर), वाफगांव (जि. नासिक) में निर्मित बावड़ियाँ एवं कुएं अहिल्याबाई की देन हैं। प्रसिद्ध तीर्थस्थल रामेश्वर व पैठण में अनेक कुंडों के निर्माण में भी अहिल्याबाई के द्वारा कई बार योगदान दिए गए हैं। इन सब से हट कर अहिल्याबाई के शासन काल में निर्मित **गया** से **रामेश्वर** तक की सड़क आज ग्रान्ड ट्रंक रोड के नाम से जानी जाती है। अहिल्याबाई के शासन काल में अध्यात्म और धर्म का इतना विकास हुआ कि आज भी उनके योगदानों को एवं कार्यों को अन्य रूपों में आगे बोया जा रहा है। एक रुचिकर बात यह भी है कि आज जो संसद भवन और राष्ट्रपति भवन जिस भूमि पर स्थित है वह भूमि इन्दौर के होलकरों की भूमि है। (इन्दौर राज्य के होलकर राजवंश के 1911 के दस्तावेज)। लोक माता अहिल्याबाई ने धर्म एवं अध्यात्म के साथ-साथ साहित्य एवं कला को भी महत्व दिया है। उनके द्वारा साहित्य कला संस्कृति को महेश्वर के प्रशासकीय कार्यों में अधिक महत्व दिया गया। महेश्वर के दरबार में साहित्यकारों, संगीतकारों एवं कलाकारों को यथोचित सम्मान दिया। अहिल्याबाई के साम्राज्य महेश्वर स्थित साड़ी उद्योग को स्थापित करने हेतु हैदराबाद से बुनकर लाकर, महेश्वरी साड़ी का निर्माण अहिल्याबाई ने प्रारंभ कराया था। ज्ञान, कला, साहित्य, संगीत, धर्म, अध्यात्म को अपनी संस्कृति में जीवित रखने वाली देवी अहिल्याबाई आज भी कई मंदिरों के दानधर्म में अपना नाम बनाए हुए हैं। इसके कुछ उदाहरण - अयोध्या का राम मंदिर, ओंकारेश्वर का ममलेश्वर मंदिर, पुष्कर मंदिर, चित्रकूट मंदिर, जेजूरी का मल्हार गौतमेश्वर मंदिर इत्यादि है। रण भूमि में अपने साहस का प्रदर्शन करने के साथ-साथ अपनी प्रजा के हृदय में स्वयं के लिए प्रेम और सम्मान का भाव भी छलकाया है। आज उनके साम्राज्य में उन्हीं के नाम से स्थापित विश्वविद्यालय है, जो अंतराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का संचार करने मे जुटा है। अहिल्या बाई के जीवन पर लिखित कई लेख हैं जो उनके साहस, अपनी संतानों के प्रति वात्सल्य एवं एक महिला शासक बनने की राह में आने वाली कठिनाइयों को बतलाते हैं। परंतु अपने ईश्वर के प्रति उनकी आस्था, अपनी प्रजा में संचार और लोकहित के लिए किए गए उनके कार्यों/ निर्माणों को भलीभाँति उनके साम्राज्य में आकर ही जाना जा सकता है। उपर्युक्त तथ्यों को और सटीकता से समझने एवं जानने के लिए इन्दौर के राजवाड़ा में स्थित **मल्हार मंदिर** या मार्कण्डेय मंदिर की दीवारों में गढ़े इतिहास का मुआयना करना सहायक सिद्ध होगा।

राष्ट्र समर्पित नर्मदेश्वर महादेव अयोध्या प्रतिष्ठा

नर्मदा के नर्मदेश्वर, अब से होंगे अवध के अवधेश्वर, - पूज्य शिवोहम् भारती जी ओम नमः शिवाय मिशन कोठी ओम्कारेश्वर।

श्रीमान चंपतराय जी महासचिव, श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अयोध्या के निर्देशन में, नजर निहाल आश्रम, ओंकारेश्वर मध्यप्रदेश के पूज्य संत 1008 श्री नर्मदानंद बापजी श्री के मार्गदर्शन में, यात्रा आयोजन समिति द्वारा राष्ट्र समर्पित **नर्मदेश्वर महादेव अयोध्या प्रतिष्ठा यात्रा** का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर पूज्य शिवोहम् भारती जी ओम नमः शिवाय मिशन कोठी ओम्कारेश्वर के मुख्य आतिथ्य, मुख्य वक्ता सुश्री उषा दीदी ठाकुर संस्कृति एवं धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री मध्य प्रदेश शासन तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रकाश जी शास्त्री माननीय संघ चालक मालवा प्रांत द्वारा की गई।

यह यात्रा 18 अगस्त से आरंभ होकर 23 अगस्त तक चली। अयोध्या श्रीराम लला के विग्रह के चारों ओर बन रहे 14 फीट चौड़े परकोटे के 6 मंदिरों में से एक मंदिर में मध्य प्रदेश के 4

फीट ऊंचे पूर्णतः प्राकृतिक नर्मदेश्वर स्थापित होंगे। यह मध्यप्रदेश के लिए सौभाग्य का विषय है।

यह आयोजन महज दो राज्यों को जोड़ने का नहीं, अपितु सांस्कृतिक भारत के इन अति विशिष्ट मान बिंदुओ को आपस में जोड़ने का अर्थ भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान से है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अवधूत संत श्रीपाद जी, संत श्री रामेश्वर तीर्थ, श्री राधेश्याम पाटीदार विभाग संघ चालक खरगोन, श्री ज्ञानेश्वर पाटिल सांसद खंडवा लोकसभा, स्थानीय विधायक श्री नारायण पटेल विधायक मांधाता, खंडवा के जिला संघ चालक डॉ. शक्तिसिंह, श्री नीरज उपाध्याय राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या, यात्रा प्रभारी श्री प्रदीप पांडेय, श्री दिलीप भाई शाह, डॉ. मनीष राय, विवेक भटोरे यात्रा समन्वयक विशेष रूप से उपस्थित थे।

अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में स्थापित होने वाले ओंकारेश्वर में मां नर्मदा से प्राप्त दिव्य शिवलिंग को आज श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के महासचिव चंपत राय जी को सौंपा गया। विदित हो कि ओंकारेश्वर के मां नर्मदा से प्राप्त नर्मदेश्वर शिवलिंग अयोध्या में निर्माणाधीन श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में राममंदिर के परकोटे में स्थापित किया जाएगा। शिवलिंग नर्मदेश्वर अयोध्या प्रतिष्ठा यात्रा के द्वारा 18 अगस्त को ओंकारेश्वर से प्रारंभ होकर अयोध्या पहुंचा है।

जय कन्हैया लाल की

डॉ. सुब्रतो गुहा

हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की।

द्वापर युग में भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी को मध्यरात्रि में मथुरा में राजा कंस के कारागार में भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया तब यह अलैकिक क्षण माता देवकी तथा पिता वासुदेव के साथ ही समस्त संसार के लिए सुखद संदेश का प्रतीक बना। कृष्ण जन्माष्टमी अर्थात् कृष्ण जन्म का अलौकिक आनंदोत्सव जिसमें भारत के सौ करोड़ हिन्दुओं के साथ ही समस्त संसार के करोड़ों अन्य हिन्दू नर-नारी उत्साहपूर्वक भक्तिरस के उल्लास में डूब जाते हैं।

रात्रि के अंधकार में जन्मे श्रीकृष्ण मथुरा के अत्याचारी दुराचारी शासक कंस के शासन को समाप्त कर न्याय एवं सुशासन के प्रकाश की ओर जगत को ले जाने में सफल रहे। अत्याचार और अराजकता का युग समाप्त हुआ और धर्मराज्य स्थापित हुआ। यह अनादिकाल से ईश्वरीय नियम है कि बुराई पर आखिर अच्छाई की विजय होती है तभी तो अपनी बहन देवकी की प्रथम सात संतानों की हत्या के बावजूद कंस देवकी की आठवीं संतान श्रीकृष्ण को मारने में असफल रहा और इसी आठवीं संतान श्रीकृष्ण के हाथों कंस मारा गया। बालक श्रीकृष्ण का पालन-पोषण अत्यधिक स्नेहपूर्वक गोकुल के नंदबाबा तथा उनकी पत्नी यशोदा के हाथों हुआ।

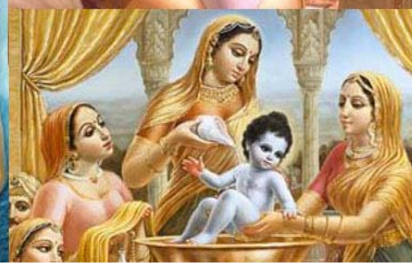

श्री कृष्ण की लीला भूमि मथुरा, वन्दावन, गोकुल तथा समूची ब्रजभूमि में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की विशेष रौनक रहती है। गांव-गांव शहर-शहर के कृष्ण मंदिर की जगमगाती रोशनी में भव्य सजावट देखते ही बनती है। एक ओर जहां राधा एवं रूकमणी से प्रेम के माध्यम से श्रीकृष्ण भक्तों को प्रेम का संदेश देते हैं, वहीं दूसरी ओर वकासुर, वत्सासुर, व्यामासुर, अधासुर इत्यादि अनेकों असुरों के विनाश के साथ कंस शिशुपान, कालयवन इत्यादि के विनाश द्वारा श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों को प्रेरणा दी कि पाप अथवा पापियों के समक्ष न झुककर उनका पूरी शक्ति से प्रतिकार करना ही मानव का सर्वोच्च धर्म है। जब कुरूक्षेत्र की युद्धभूमि के पांडवों की ओर से अर्जुन ने यह कहते हुए अपने हथियार रख दिए कि मैं कौरव सेना में अपने निकट संबंधियों की हत्या नहीं कर सकता तब गीता उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पुनः हथियार उठाकर सभी पापियों के विनाश का निर्देश देते हुए समझाया था।

परित्राणाय साधूनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे। अर्थात अनादिकाल से ही प्रत्येक युग में ईश्वर धरती पर इस उद्देश्य से मानव अवतार लेते हैं, ताकि दुर्जनों का समूल विनाश एंव सज्जनों के संरक्षण के साथ ही धर्म की स्थापना हो सके। स्पष्ट रूप से ईश्वर ने मनुष्यों को संदेश दिया कि पापियों एवं राष्ट्र के शत्रुओं का विनाश करना हिंसा नहीं बल्कि कर्म है, धर्म है।

जन्माष्टमी की इस मंगल बेला में आइए हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि कुछ मनुष्यों द्वारा शत्रु व दुर्जनों के सामने सिर झुकाकर समर्पण कर पिटते रहने एवं प्रताड़ित होते रहने की काल्पनिक शिक्षा का परित्याग कर हम भगवद् गीता में व्यक्त ईश्वरीय वाणी द्वारा प्रतिपादित बुराई की शक्तियों के समूल विनाश की शिक्षा को जीवन में आत्मसात करने का प्रयास अवश्य करेंगें, और जब-जब ईश्वरीय वाणी और मानव वाणी में विराधाभास होता है- तब-तब ईश्वरीय वाणी को ही स्वीकार कर उसके अनुसार जीवन पथ पर चलते रहेंगे। तभी हम भक्ति भाव से कह पाएंगे-

मेरा आपकी दया से सब काम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है।।

महिला सशक्तिकरण: नव युग का आदर्श

वेदिका सावल

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी लक्ष्मी बाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और राज्य क्रांति की वीरांगना थीं, जिन्होंने भारत पर अवैध कब्ज़ा कर बैठे अंग्रेजों को जड़ से उखाड़ फेंका था। वह युद्ध भूमि में ही शहीद हो गई थीं लेकिन उन्होंने पूरे देश और अंग्रेजों के सामने यह मिसाल कायम कर दी थी कि एक नारी, सौ आदमियों पर भारी। वह एक साधारण नारी नहीं वह मां दुर्गा का स्वरूप हैं और सिर्फ लक्ष्मी बाई ही नहीं बल्कि अहिल्याबाई होल्कर, कल्पना चावला, सावित्रीबाई फुले, आनंदी गोपाल जोशी जैसी अन्य महिलाओं ने भारत के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज किया और पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बनीं। इन्हीं से तुहारे और मेरे जैसी महिलाओं को शक्ति मिलती है। महिला सशक्तीकरण आज के समय में एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। महिलाओं को समाज में उच्चतम स्थान प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है। यह एक ऐसा विषय है जिसमें विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रश्नों का सामना करना पड़ता है।

महिलाओं को शिक्षा का अधिकार होना चाहिए। शिक्षा महिलाओं को ज्ञान, स्वाधीनता और स्वाभिमान की ओर ले जाती है। शिक्षित महिलाएं अपने अधिकारों को समझती हैं। महिलाओं को आर्थिक स्वाधीनता का अधिकार होना चाहिए। आर्थिक स्वाधीनता महिलाओं को अपने जीवन के निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। वे अपने परिवार के लिए आर्थिक सहायता कर सकती हैं और अपने सपनों को पूरा कर सकती हैं। महिलाओं में सामाजिक स्वाधीनता जीवन में समानता और सम्मान की अनुभूति कराती है। वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकती हैं और समाज में अपनी आवाज उठा सकती हैं।

हमारे समाज में अभी भी कई लोग महिलाओं को केवल घर के कामों के लिए ही समझते हैं। इसे बदलने के लिए हमें महिलाओं की योग्यता और क्षमता को मान्यता देनी होगी। दूसरी चुनौती है लिंगानुपातिकता का मुद्दा। अभी भी हमारे समाज में महिलाओं को लिंग के आधार पर अन्यायपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के लिए हमें समाज में जागरूकता फैलानी होगी और महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा करनी होगी। वर्तमान में भारतीय समाज में नारी सशक्तीकरण को लेकर बहुत सी भ्रांतियां फैलायी जा रही हैं। इस कारण समाज में परिवार जैसी संस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। हमें सजग होकर नारीवाद जैसी भ्रामक बात से समाज को बचाकर चलना होगा। हमारे देश में ऐसे आदर्श रहे हैं कि हमें नए सिरे से किसी प्रतिमान की आवश्यकता नहीं है। इस कारण हमें अपने पूर्वजों और परंपराओं को आगे की ओर ले जाने के निरंतर प्रयास करने होंगे।

भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाण वर्ष (भाग-3)

श्री कमल जैन

भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में प्रारंभ की गई इस श्रृंखला के पिछले अंक में भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित पाँच महाव्रतों में से प्रथम महाव्रत **अहिंसा** पर चर्चा की गई थी। इस अंक में हम भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित द्वितीय महाव्रत **सत्य महाव्रत** पर चर्चा करेंगे-

सत्य महाव्रत - भगवान महावीर ने अहिंसा के साथ-साथ ही सत्य पर भी अत्यधिक बल दिया है। उन्होंने कहा कि **सच्चं खु भगवं**-अर्थात् सत्य ही भगवान है। सत्य और अहिंसा- ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। अहिंसा के अभाव में सत्य और सत्य के अभाव में अहिंसा का कोई अस्तित्व और मूल्य नहीं है। सत्य की आराधना के बिना सारी साधना मिथ्या है। सत्य की परिभाषा में कहा है कि- जिस शब्द के प्रयोग से जन-जन का हित और कल्याण होता है वह सत्य है। इस लोक में सत्य ही सारभूत है। सत्य महासागर से भी अधिक गंभीर, चन्द्र से भी अधिक सौय और सूर्य मण्डल से भी अधिक तेजस्वी है। (सच्चं..गंभीरतरं महासमुद्दाओ, सच्चं..सोमतरं चंदमंडलाओ, दित्ततरं सूरमंडलाओ) सत्य भी ऐसा बोलना जो स्पष्ट हो, संशय उत्पन्न करने वाला न हो, जैसा कि युधिष्ठिर ने महाभारत के युद्ध के समय अश्वत्थामा के विषय में बोला था। महावीर ने कहा है कि बुद्धिमान वह है जो कर्कश, कठोर, किसी के मर्म को उद्घाटित करने वाला, आहत करने वाला सत्य नहीं बोलता क्योंकि ऐसा सत्य बोलने से पाप कर्म का उपार्जन होता है। जैसे कि - अन्धे को अन्धा और काणे को काणा कहना। देखने में यह कथन भले ही सत्य लगता हो, परन्तु आहतकारी भाषा होने से वह सत्य की श्रेणी में नहीं आता। ऐसे कथन में व्यंग्य और घृणा की अथवा सामने वाले का उपहास करने की भावना रही हुई होती है। ऐसा कहना तथ्य तो हो सकता है पर सत्य नहीं। तथ्य हितकर ही हो, यह आवश्यक नहीं, वह अहितकर भी हो सकता है। उसमें राग-द्वेष का मिश्रण भी हो सकता है। इसीलिए महावीर ने ऐसे सभी सत्य को भी बोलने से मना किया है। इसके अतिरिक्त हिंसात्मक कार्य की प्रशंसा करने वाला और ऐसा सत्य भी नहीं बोलना चाहिए जिसे सुनकर कोई प्राणियों की हिंसा के लिए उद्यत हो। उन्होंने कहा कि- सत्य कहो पर वह सत्य चुभने वाला न हो, ऐसा न हो जो हृदय में छेद कर दे। वही सत्य बोलो, जो प्रिय एवं कल्याणकारी हो। जैसा कि स्कन्द पुराण में भी कहा गया है- सत्य बोलो, प्रिय बोलो, किंतु अप्रिय सत्य कभी मत बोलो। सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात् सत्यमप्रिये। सत्य केवल वाणी तक ही सीमित नहीं है। सत्य की उत्पत्ति सबसे पहले मन में होती है जो बाद में वाणी के द्वारा व्यक्त होता है तथा आचरण के द्वारा मूर्त रूप लेता है। यदि मन में कुछ है और वाणी में कुछ, तथा आचरण किसी अन्य ही रूप में किया जा रहा है तो वास्तव में ऐसा व्यक्ति सत्यनिष्ठ नहीं है। उसके जीवन में यथार्थता नहीं है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति के मन, वचन और आचरण में एकरूपता रहती है, अनेकता नहीं। वह जो चिंतन करता है, सोचता है, वही वाणी के द्वारा व्यक्त करता है और उसी को आचरण के द्वारा मूर्त्त रूप देता है। भगवान महावीर ने प्रश्न व्याकरण सूत्र में कहा है- जैसा कहा है, वैसा क्रिया के द्वारा साकार करना सत्य है (सच्चं जह भणियं तह य कम्मुणा होइ)। भगवान महावीर ने कहा कि असत्य बोलने के मुख्य रूप से चार कारण हैं- क्रोध, लोभ, भय और हास्य। इनमें से किसी भी कारण से असत्य नहीं बोलना चहिए (कोहा वा, लोहा वा, भया वा हासा वा, णेव सयं मुसं वइज्जा)। जब मन में क्रोध की आँधी चल रही हो, लोभ का बवण्डर उठ रहा हो, भय का भूत मन पर सवार हो, और हास्य का प्रसंग हो, उस समय मानव सहज ही असत्य भाषण करता है, क्योंकि ये विकार जीवन की पवित्रता और मानव के विवेक को नष्ट कर देते हैं। जिससे उसकी वाणी और व्यवहार में असत्य प्रकट होता है। ये चार कारण मुख्य तौर पर कहे गए हैं। परन्तु इन्हीं की व्याख्या एवं विस्तार करते हुए इनमें मान, माया, राग-द्वेष, कलह, दोषारोपण आदि कारणों को भी सॅमिलित किया गया है। इस तरह असत्य बोलने की पीछे चित्त की अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ रही होती हैं।

महावीर ने सत्य का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अथवा अपरिग्रह महाव्रत में दोष का आचरण करने वाला मुनि अपनी भूल स्वीकार कर उचित दण्ड एवं प्रायश्चित ग्रहण कर यदि अपनी शुद्धि कर ले तो उसे तो एक बार को मुनि संघ का आचार्य बनाया भी जा सकता है। लेकिन सत्य महाव्रत में दोष का आचरण करने वाला मुनि कदापि आचार्य बनने के योग्य नहीं हो सकता। इस प्रकार असत्य बोलने वाले की प्रामाणिकता नष्ट हो जाती है और फिर वह सार्वजनिक जीवन में किसी महत्वपूर्ण पद के भी अयोग्य हो जाता है। योगसूत्रकार पतंजलि ने कहा है- सत्य-प्रतिष्ठित व्यक्ति को वाक्सिद्धि प्राप्त होती है (योगसूत्र-2/36)। सत्य के इस अपरिमित महत्त्व के कारण ही भारत का **राष्ट्रीय आदर्श वाक्य सत्यमेव जयते** है जो हमारी शासकीय मुद्रा और राष्ट्रीय चिन्ह पर भी अंकित है। अतः हमें असत्य भाषण के दुष्परिणामों और सत्य भाषण के महत्त्व को जानकर अपने जीवन में सत्य का ही प्रयोग करना चाहिए।

दया और राजशाही

एक व्यक्ति शिकार के लिए जंगल में गया। वहाँ उसने एक हिरणी को देखा। हिरणी के साथ उसका छोटा-सा बच्चा भी था। शिकारी उनके पीछे दौड़ा। हिरणी तो छलाँगें भरती हुई जंगल में जा घुसी किन्तु उसका बच्चा पीछे रह गया। शिकारी ने उसे पकड़ लिया।

शिकारी बच्चे को लेकर चला। हिरणी ने जब देखा कि शिकारी उसके बच्चे को लेकर जा रहा है तो वह जंगल से बाहर निकल आई। शिकारी बच्चे को लिये हुए आगे-आगे और हिरणी उनके पीछे-पीछे।

शिकारी को पता नहीं था कि हिरणी उसके पीछे-पीछे आ रही है। उसने कुछ समय बाद यों ही जब पीछे की ओर देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि हिरणी पीछे-पीछे चली आ रही है। और जब उसने गौर से देखा तो उसको लगा कि हिरणी की आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है।

साँझ हो गई थी। शिकारी अपने गाँव के समीप आ गया था। हिरणी तब भी उसके पीछे-पीछे चली आ रही थी। शिकारी में शायद कुछ मानवता बची हुई थी। उसको दया आ गई और उसने बच्चे को छोड़ दिया।

बच्चा छूटते ही कुलाँचें भरता हुआ अपनी माँ के पास पहुँच गया। हिरणी ने कृतज्ञ नेत्रों से शिकारी की ओर देखा और बच्चे को लेकर जंगल की ओर चली गई।

इस घटना के पश्चात उसने शिकार करना छोड़ दिया। तब एक रात उसे सपना आया। कोई उससे कह रहा है - **'इस दया के बदले में तुम्हें राजशाही मिलेगी।'** कहते हैं बाद में वही शिकारी अपने देश का राजा बना।

सावण आयो

डॉ. शशि निगम

सावण आयो सावण आयो
सावण आयो रे, के झूला झूलो रे

बादळा उमड़ी-घुमड़ी रिया हे,
बीजळी नगाड़ा बजावे हे
सतरंगी इन्द्र धनुष तण्यो हे,
मोर होण नाच बतावे हे
के सावण आयो रे...

बादळा अमृत रसावे हे,
धरती फूली नी समावे हे
के बायरो, गीत सुणावे हे,
झाड़ ना ताळी बजावे है
के सावण आयो रे...

धरती हरी-भरी हुईगी,
सबका हिरदे खुसी छईगी
मादळ पे गावे भजन मंडली,
छोरा-छोरी नाचे दई ताळी
के सावण आयो रे...

सखी ना बाग-बगीचा जाय,
वाँ से फूल पाती लई आय
सगळी गीत मिळी ने गाय,
झूला के ऊँचों-ऊँचों चढ़ाय
के सावण आयो रे...

छमा-छम बरसे इन्दर राय,
गोरी का मुखड़े लट बिखराय
लटाँ से बूंदा झर-झर जाय,
गोरी को हियो घणो धड़काय
के सावण आयो रे...

सावन, शिव एवं पर्यावरण

डॉ. ओ.पी. जोशी

इस वर्ष 54 वर्षों बाद सावन में अधिक मास एवं हरियाली अमावस्या का पर्व आया। अधिक मास को मलमास एवं पुरूषोत्तम मास भी कहते हैं। सावन को शिवजी का महीना भी कहा जाता है क्योंकि इसी माह में समुद्र मंथन से निकले विष को उन्होंने पिया। इस विषपान से उनका कंठ नीला हो गया एवं वे नीलकंठ कहलाये। कई साहित्य के वर्णनों में शिवजी को प्रकृति का देवता या प्रकृति का विराट स्वरूप बताया गया है। विशाल पर्वतमालाएं शिवजी का आवास तथा जंगल कार्यक्षेत्र दर्शाये गए हैं।

जटाओं के मध्य से निकली गंगा जल और जंगल के अटूट रिश्ते का प्रतीक है। पर्यावरण के संदर्भ में भगवान शिव एक ओर भोजन श्रृंखला (फूड चेन) को प्रदर्शित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर इस माह में होने वाली बरसात प्रकृति के जल चक्र को पूरा करती है। शिवजी के पसंद के पौधे पर्ण हरीम (क्लोरोफील) खनिज, पानी एवं कार्वडायआक्साइड की मदद से अपना भोजन बनाते हैं एवं इसलिए उत्पादक (प्रोड्यूसर) कहे जाते हैं। शिवजी का वाहन नंदी शाकाहारी है जो अन्य शाकाहारी जीवों के साथ भोजन श्रृंखला की दूसरी कड़ी दर्शाता है। इसी प्रकार शिवजी के गले में विराजमान सर्प मांसाहारी जीवों की तीसरी कड़ी को इंगित करता है। हमारे कृषि-प्रधान देश में नंदी एवं सर्प दोनों का ही महत्व है। नंदी खेती के कई कार्यों में उपयोगी है एवं सर्प फसल बर्बाद करने वाले चूहों की संख्या को नियंत्रित करता है। चूहों का एक जोड़ा एक वर्षभर में 850 संतानें पैदा करता है। जीवों के मृत शरीर से कई सूक्ष्मजीव (जीवाणु फफूद) तथा चील एवं गिद्द समान बड़े जीव अपना भोजन प्राप्त करते हैं।

भोजन श्रृंखला के बाद अब जल चक्र की बात करते हैं। सभी जीवों के लिए जरूरी जल की आपूर्ति सावन माह की बरसात के गिरे जल से होती है। ऊँचे पहाड़ों पर एवं ठंडे प्रदेशों में जल के ठोस स्वरूप वाली बर्फ गिरती है। धरती पर गिरे जल की कुछ मात्रा धरती में गहराई तक पहुँचकर भूजल का स्वरूप ले लेती है। तालाबों एवं झीलों में भी कुछ मात्रा एकत्र हो जाती है। जबकि काफी बड़ी मात्रा नदियों, नालों से पुनः समुद्र में पहुँच जाती है। सूर्य की गर्मी से समुद्री पानी से बनी वाष्प से बादल बनते हैं, जो मानसून की हवाओं पर सवार होकर फिर धरती पर पानी बरसाते हैं। समुद्र में, नदी, नालों, तालाब, झीलों, पहाड़ों पर बर्फ एवं वायुमंडल में वाष्प के रूप में कितनी पानी की मात्रा है, इसकी गणना वैज्ञानिकों ने कर ली है एवं विभिन्न इकाइयों में प्रस्तुत की है। जहा के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि पृथ्वी के निर्माण के समय इसकी जितनी मात्रा थी उतनी ही आज भी है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकरण, आधुनिक खेती एवं बदहाल जीवनशैली से एक और जल का उपयोग लगातार बढ़ रहा है तो दूसरी ओर इसका प्रदूषण भी। मानव समेत कई कारणों से जल चक्र काफी अनियमित हो गया है। बरसात से गिरा पानी पर्यावरण को साफ कर पेड़ पौधों की कार्य दक्षता भी बढ़ा देता है क्योंकि उस पर जमा धूल एवं प्रदूषणकारी पदार्थ भी हटा दिये जाते हैं। वायुमंडल में प्रदूषण के रूप में फैली गंदगी भी सूचकाक (ए.क्यू.आई) सावन के माह में सुरक्षित श्रेणी में आ जाते है। शहरो, कारखानों एवं खेती के कार्यो से जमीन एवं जल स्त्रोतों में फैली गंदगी या कचरा भी पानी के बीच बहाव से साफ हो जाता है। वर्तमान में पेड़ पौधे रोजाना प्रदूषण रूपी विष का विषपानकर नीलकंठ बन गए है। शिव एवं सावन हमें प्रकृति या पर्यावरण के साथ साहचर्य का संदेश देते हैं एवं साथ ही यह चेतावनी भी देते हैं कि प्रकृति के साथ अत्याचार का अंत प्रलयकारी तांडव के रूप में ही होगा।

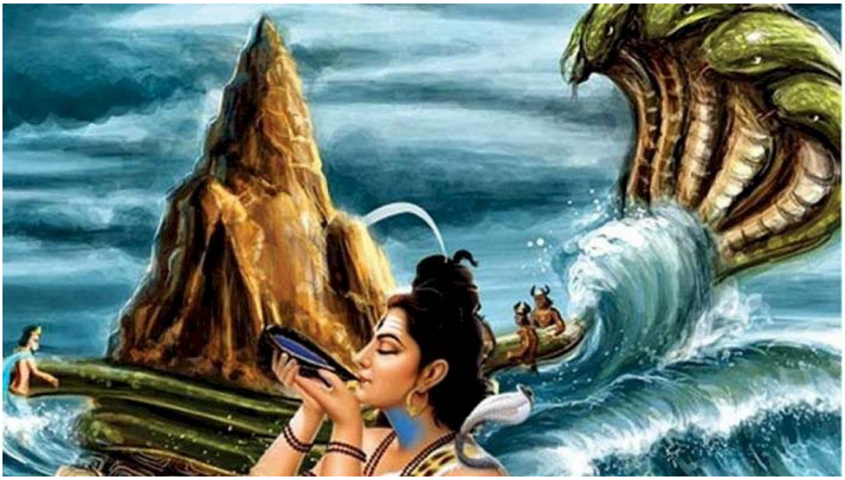

फूलों से समृद्धि की ओर

डॉ. रत्नदीप निगम

हमारे मालवा की माटी में किसान भाइयों को समृद्ध करने के अनेक गुण उपस्थित हैं । इन्हीं गुणों में से एक महत्वपूर्ण गुण है फूलों के उत्पादन के अनुकूल जलवायु और मिट्टी में पोषक तत्वों की पर्याप्त उपलब्धता। आज के समय पूरे मालवा सहित देश में फूलों की माँग में बहुत वृद्धि हो रही है क्योंकि फूलों का उपयोग मंदिर में भगवान को अर्पित करने के साथ साथ सजावट के लिए, औषधि निर्माण के लिए और इत्र निर्माण के लिए अधिक होने लगा है। ऐसे में हमारे किसान भाइयों को फूलों की खेती करने के प्रयास करने चाहिए , चूँकि फूलों की खेती नगद फसल है जिससे शीघ्रता से पैसे कमाए जा सकते हैं।

मालवा में मुख्यतः गेंदा, गुलाब और गुलदाउदी के फूलों की खेती के अनुकूल जलवायु है। इस खेती में कम भूमि में भी अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। फूलों की खेती के लिए यह आवश्यक है कि कुछ सावधानियों का ध्यान रखा जाए क्योंकि फूल कोमल होते हैं अतः इनका संरक्षण, वितरण और कटाई का समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। फूलों की कटाई सदैव सुबह सुबह ठंडे समय करनी चाहिए जिससे उस पर जमी ओस की बूंदों से वे तरोताजा रहेंगे। उनको बाजार में भेजने के लिए उसकी पैकिंग ऐसे पेपर एवम् बॉक्स में की जानी चाहिए जिससे उनकी नमी और कोमलता प्रभावित न हो । फूलों का भंडारण करने की अपेक्षा शीघ्र ही बाजार भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए। फूलों की खेती करने से पहले उन इत्र निर्माण की फैक्ट्रियों तथा सजावट के इवेंट व्यवसायियों से पहले ही संपर्क कर लेना चाहिए जिससे उनको तुरंत वितरण हो सके और फूलों को हानि नहीं हो ।

आजकल संरक्षित एवम् आधुनिक तकनीक को अपनाकर भी हम फूलों का उत्पादन कर सकते हैं जैसे पॉली हाउस में उत्पादन। इससे हम वर्षभर फूलों की खेती कर सकते हैं, इसके अतिरिक्त टपक सिंचाई की तकनीक का उपयोग कर कम पानी में हम फूलों की फसल ले सकते हैं। जो फूल नष्ट हो जाते हैं उससे हम खाद भी बना सकते हैं जिससे हमारा खाद का खर्च भी कम हो जाता है। अर्थात् कम भूमि, कम पानी और कम खर्च में हम फूलों की विभिन्न प्रजातियों का उत्पादन कर समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

हिंदी की वर्तमान स्थिति

प्रो. खेमसिंह डहेरिया

किसी भाषा को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलने के लिए कम से कम 129 सदस्य देशों के समर्थन की जरूरत होती है। और जिस तरह अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने संबंधी भारत के प्रस्ताव को 177 सदस्य देशों ने समर्थन दिया, उससे उम्मीद बंधी है कि आने वाले दिनों में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा हासिल होने में मुश्किल नहीं आएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ की अभी छः आधिकारिक भाषाएं हैं, जिसमें अरबी, अंग्रेजी, रूसी, चीनी, फ्रेंच और स्पैनिश शामिल हैं। शब्दार्थ ग्रहण की सहिष्णुता, उदारता और आत्मीयता के स्तर पर हिंदी भाषा काफी समृद्ध है और अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् करने की शक्ति इसमें सर्वाधिक है। इसके लिए हमें हिंदी के बहुमुखी आयामों को पहचानकर उन्हें स्वीकार करना होगा और एक व्यवहार मूलक, उद्योग-व्यापार, व्यवसाय मूलक तथा रोजगार मूलक दृष्टि को विकसित करना होगा। साथ ही, हमें विज्ञान-प्रौद्योगिकी, गणितीय-संगणकीय, अनेकानेक प्रयोजन मूलक और व्यवहार मूलक क्षेत्रों में हिंदी की पैठ कराने की संकल्प शक्ति की जरूरत है। इसमें अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। हिंदी को किसी पर थोपा नहीं गया है। हिंदी में काम करने वाले कार्मिकों के लिए प्रोत्साहन एवं पुरस्कार की योजनाएं हैं, किन्तु हिंदी में काम नहीं करने वाले कार्मिकों के लिए दण्ड का कोई प्रावधान नहीं है। भारत सरकार चरणबद्ध कार्यक्रमों के जरिए राजभाषा हिंदी को सरकारी संगठनों, उपक्रमों, बैंकों आदि पर लागू करने की ओर प्रवृत्त है। आधुनिक प्रौद्योगिकी की भाषा यानी कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि की भाषा को भी जीवन के निकट लाया जाए। आज हिंदी में आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग बहुतायत में हो रहा है। भाषा के नये रूप का निर्माण भी हो रहा है। क्या युवा और क्या प्रौ सभी आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं। मोबाइल संदेश की तो नई भाषा ही बनती जा रही है। आज हिंदी, विश्व की अन्य आधुनिक भाषाओं से नवीन प्रौद्योगिकी के उपयोग की दृष्टि से किसी भी प्रकार पीछे नहीं है।

भारतेन्दु हरिशन्द्र ने 1873 में कहा था- हिंदी नई चाल में ढली। हिंदी गद्य का परिष्कार भारतेन्दु युग में ही हुआ, जिसे हम खेंी बोली कहते हैं। हिंदी को खड़ी करने में ब्रजभाषा और अवधी दोनों बोलियों का बड़ा योगदान है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को खड़ी बोली को विकसित, परिष्कृत करने का श्रेय जाता है। इसके बाद भारतेन्दु मण्डल के अनेक साहित्यकारों ने इसका समर्थन किया। यही खड़ी बोली विज्ञान लेखन में प्रगति की परिचायक है। 1900 ई. में प्रयाग से **सरस्वती** पत्रिका का प्रकाशन एक युगान्तरकारी घटना है। इसके द्वारा पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली या हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बना डाला। वैसे तो कम्प्यूटर युग का सूत्रपात 1984 में हुआ, किन्तु हिंदी में कम्प्यूटर की पहली पुस्तक 1970 में रमेश वर्मा ने लिख दी थी। जब स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा प्रारंभ हुई तो अनेक पाठ्य पुस्तकें आ रही हैं। इससे सूचना प्रौद्योगिकी का पल्लवन हुआ। भोपाल से ही प्रकाशित **इलेक्ट्रॉनिकी** एक महत्वपूर्ण पत्रिका है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने में कार्यरत है। उम्मीद है कि हिंदी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था- भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी। आज सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। हिंदी दुनिया की सबसे लोकप्रिय भाषा है, जिसका मीडिया में धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है, ताकि मीडिया ज्यादा से ज्यादा लोकप्रिय हो सके। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भी यह अहसास हो चुका है कि विदेशी माल को हिन्दुस्तानी बाजार में फैलाने के लिए हिंदी का प्रयोग जरूरी है। इसलिए उनके विज्ञापन भी हिंदी में होते हैं। सूचना विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी पत्र-पत्रिकाएं एक तरह मशाल का कार्य कर रही हैं। देश से बाहर हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें बनी फिल्में विदेशी सिनेमाघरों में स्थान पाती हैं।

विश्व साक्षरता दिवस

शैलेंद्र शांडिल्य

विश्व साक्षरता दिवस क्या है

यूनेस्को ने 1965 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाने की घोषणा की थी। इसके बाद से 1966 से हर साल 8 सितंबर को यह दिन मनाया जा रहा है।

किसी भी देश के विकास के लिए देश के नागरिकों का साक्षर होना उस देश के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साक्षरता के इस महत्व को बताने और लोगों के बीच साक्षरता को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साक्षरता दिवस मनाया जाता है। साक्षरता दिवस के दिन समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से इस दिन को विशेष महत्व के साथ सैलिब्रेट किया जाता है।

भारत और विश्व साक्षरता दिवस

भारत में भी विश्व साक्षरता दिवस को एक महत्वपूर्ण दिन के रूप में मनाया जाता है। साक्षरता शब्द का अर्थ है पढ़ने और लिखने में सक्षम होना है और जब मैं अपने भारत के इतिहास का अध्ययन करता हूं तब आश्चर्य होता है कि जिस भारत में साक्षात् ज्ञान की देवी के रूप में मां सरस्वती का पूजन किया जाता है। प्रतिवर्ष बसंत पंचमी मां सरस्वती के जन्म दिवस के रूप में मनाई जाती है। बच्चों का विद्यारंभ संस्कार करने की परंपरा है क्या वहां पर लोगों को पढ़ना-लिखना सीखने की कोई व्यवस्था राज्य शासन पर निर्भर रही होगी? बिल्कुल नहीं! आइए भारत की प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर एक दृष्टि डालते हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षा -

शिक्षा की गुरुकुल पद्धति प्रचलित थी जिसमें गुरु के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की जाती थी। उपनयन संस्कार के बाद गुरु के आश्रम में प्रवेश किया जाता था जहाँ लगभग चौबीस वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की जाती थी।

वैदिक शिक्षा शास्त्रियों में शिष्य वेद, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, ब्रह्मविद्या आदि का अध्ययन करते थे। प्राचीन भारतीय समाज में गुरु को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत मधुर एवं समाधानपूर्ण थे। वैदिक युग में आचार्य और शिष्य का मध्य सीधा संबंध था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा में शुल्क प्रदान करने का कोई निश्चित नियम नहीं था। शिक्षा प्रदान करना आचार्यो का पुनीत कर्तृतव्य माना जाता था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र

- तक्षशिला
- नालंदा
- विक्रमशिला
- वल्ली
- काशी
- कैन
- उदयन्तपुरी
- अंहिलपाटन
- धारा (भोजशाला)
- कश्मीर
- काँची

1000 वर्षो के सतत संघर्ष काल में अन्य सभी व्यवस्था की तरह भारत की शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह नष्ट हो गई तथा षड्यंत्र पूर्वक अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को भारत में थोपा गया। इसी का परिणाम है कि वर्तमान भारत में शिक्षा के क्षेत्र में वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार निम्नांकित तथ्य दिखाई पड़ते हैं-

भारत की साक्षरता

भारत में साक्षरता के मामले में पुरुष और महिलाओं में काफ़ी अंतर है जहां पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 है वहीं महिलाओं में इसका प्रतिशत केवल 65.46 है। भारत में साक्षरता पहले की अपेक्षा काफी बेहतर हुई है। जहां तक मेरा मानना है कि आने वाले 15 से 20 वर्षों में भारत की वैश्विक साक्षरता दर 99.5 प्रतिशत होने की सम्भावना है।

इंदौर में यूसुफ ने 8 वर्ष की लड़की को घर में अकेली देखकर दुष्कर्म किया और कहा कि किसी को बताया तो जान से मार दूंगा।

इंदौर में यूसुफ नाम के बिल्डर ने चौकीदार की 8 वर्ष की नाबालिग लड़की को घर में देखा, उसे पानी लाने अंदर भेजा और जब लड़की पानी लेकर आई तो उसे बद नीयत से छूने लगा, उसके साथ दुष्कर्म किया।

नाबालिग लड़की अपनी शक्ति से उसका पूरा विरोध करते हुए रोने लगी, तो यूसुफ उस पर 10-10 के नोट फेंकने लगा और कहा कि किसी को बताना मत अन्यथा जान से मार दूंगा।

लड़की के माता-पिता जब घर आए तो लड़की ने उन्हें पूरी बात बताई। सिंगापुर टाउनशिप के सभी रहवासी यूसुफ पर कठोर कार्यवाही की मांग कर रहें हैं, वे जिलाधीश से भी मिले हैं।

लसूडिया थाना में यूसुफ के विरुद्ध प्रकरण दर्ज किया गया है।

महू के चक्की वाले बाबा

महू के चक्की वाले बाबा की वाल्मीकि, धोबी, कहार, अग्रवाल, ब्राह्मण समेत 26 समाज प्रमुखों ने उठाई पालकी, समरसता का अद्भुत नजारा, हिन्दू सामाजिक संगठनों ने उठाई सुरक्षा और व्यवस्था की जिम्मेदारी महू के प्रसिद्ध चक्की वाले महादेव की सवारी प्रतिवर्ष सावन में धूम-धाम से निकलती है। मान्यता है कि बाबा अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए नगर भ्रमण को आते हैं, इस वर्ष यह सवारी अतिविशिष्ट रही,

क्योंकि बाबा की पालकी को सर्वप्रथम नगर के 26 जाति प्रमुखों ने उठाकर सवारी का प्रारंभ किया। यह सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट उदाहरण है। हिन्दू समाज में आक्रांताओं के कारण आयी कुरीति को अब हिन्दू समाज निकाल फेंकने को आतुर है। महू के नागरिको का, सभी जाति-समाज प्रमुखों का मौन सन्देश उस समय आया है, जब महू में कुछ संगठन सवर्ण-अवर्ण, हिन्दू-अहिन्दु जैसे शब्द प्रचलन में लाकर, इस तरह की तुच्छ घटनाओं को उठाकर वर्ग-संघर्ष को जन्म देने के कुत्सित प्रयास कर रहे हैं।

वहीं यह पालकी किसी एक संस्था या समिति द्वारा नहीं, बल्कि महू के प्रत्येक हिन्दू द्वारा निकाली जा रही थी, इसीलिए तो सवारी में नगर के प्रत्येक गली-मोहल्ले से बाल-युवा-मातृशक्ति और वृद्ध आये, वही दूसरी ओर नगर के सामाजिक संगठनों ने यात्रा की सुरक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी निभाई।

आपात्काल

आपात्काल के समय जो जेल में थे और जो बाहर थे, सबने कष्ट झेले। उस समय की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए वह सत्य आज की पीढ़ी के सामने लाना चाहिए - सुनील देशपांडे (सह संपर्क प्रमुख, राष्ट्रीय स्व. संघ)

आपात् काल में देश के विभिन्न स्थानों पर मीसाबंदी रहे ज़न नायकों को किस प्रकार यातना दी गई और देश के लोकतन्त्र पर किस तरह कुठाराघात किया गया, इन संस्मरणों को संघ के स्वयंसेवक , लेखक व इंजीनियर श्री रमेश जी गुप्ता ने **मैं मीसाबंदी** नामक पुस्तक में संकलित किया है ।

आपात् काल के दौरान 19 माह तक जेल में रहे श्री रमेश जी गुप्ता ने अपनी इस पुस्तक में आपात् काल में किये गये अन्याय, अत्याचार और तत्कालीन तानाशाही का सजीव चित्रण किया है ।

पुस्तक विमोचन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री सुनील जी देशपांडे ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस पुस्तक का लिखना इसलिए भी आवश्यक है कि आपात् काल के समय सरकार की जो निरंकुश व दमनकारी प्रवृत्ति थी वह आज की पीढ़ी के संज्ञान में आना चाहिए ताकि उस प्रवृत्ति की पुनरावृत्ति भविष्य में कदापि ना हो ।

आपात् काल के दुखदाई कालखण्ड में मीसाबंदियों ने तो अकल्पनीय कष्ट झेले ही, परंतु उनके परिवार व आश्रितों ने भी असहनीय वेदना का दृढ़तापूर्वक सामना किया ।

यह पुस्तक समाज जागरण का कार्य करेगी, उन्होंने कहा कि देश को आगे बढ़ाने के लिए सभी समाजों को राष्ट्र निर्माण मे सम्मिलित होना चाहिए। सम्मान, सत्कार करना आसान है पर त्याग करना बहुत मुश्किल है।

जाग रहा है आज देश का वह सोया अभिमान......

इसी झाबुआ में कभी **तुम हिंदू नहीं हो** ऐसा कहकर **ईसाई मिशनरिया** जनजातीय समाज का झूठ -छल -प्रलोभन और डर दिखाकर कन्वर्जन किया करती थी।

जनजाति बहुल जिला **झाबुआ** में हजारों -हजार मातृशक्ति -नागरिक भीषण वर्षा में कांवड़ यात्रा में निकलें

विभाजन के समय अगणित सिख -सिंधी परिवारों को विस्थापित होना पड़ा, नागरिकों ने हमारी बहन- बेटियों के शील की रक्षा में अपना बलिदान दे दिया -सुरेंद्र सिंह भामरा

14 अगस्त की रात्रि विभाजन की कालिख थी, अनेक सिख और सिंधी परिवारों को मध्यरात्रि में अपना सब कुछ छोड़कर विस्थापित होना पड़ा, क्योंकि हमारे पुरखे यह जानते थे कि भविष्य में पाकिस्तान उनके लिए सुरक्षित नहीं रहेगा और उनका वह अनुमान आज वास्तविकता में परिवर्तित हो गया है।

जब हजारों सिंधी और सिख परिवार पाकिस्तान से भारत आ रहे थे तब हमारी बहन-बेटियों के शीलभंग का भी कुत्सित प्रयास किया गया, ऐसे में हमारे परिवारों के युवाओं और नागरिकों ने हमारी बेटियों -माताओं के चरित्र की रक्षा करने के लिए अपना बलिदान दे दिया।

उपरोक्त बातें देवास में विभाजन विभीषिका के समय में सिख व सिंधी समाज के पाकिस्तान से भारत आने के संस्मरण पर आयोजित व्याख्यान में सुरेंद्र सिंह भामरा ने प्रकट किए।

सुरेंद्र सिंह ने आगे कहा कि हमारी वर्तमान पीढ़ी को विभाजन की विभीषिका और उसके कारण हमारे पुरखों के संघर्ष और बलिदान के बारे में बताना चाहिए। कार्यक्रम में सिंधी और सिख समाज के नागरिक उपस्थित रहे।

देवास के नेमावर तीर्थ में ३५ परिवारों के १९० लोग पुन: अपनी हिन्दू संस्कृति में लौटे

नेमावर। नर्मदा के तट पर बसे नेमावर में पास के एक गांव के 35 परिवारों के 190 लोगों ने इस्लाम को पूर्णतः त्यागकर पूरी तरह हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया है। ये लोग घुमंतू समाज से संबंधित हैं।

इन परिवारों के पूर्वज पूर्व में किसी कारण से इस्लामिक परंपराओं को अपनाने लगे थे, किंतु फिर भी वे कुलदेवी चामुंडा का पूजन करते थे। विवाह की पद्धति भी हिंदू परिवारों की ही तरह रहती थी। अपने स्वधर्म वापसी पर अनुभव साझा करते हुए रामसिंह ने कहा कि हमारे पूर्वज भले ही परिस्थितिवश इस्लामिक पद्धति को अपनाने लगे थे पर हमारे रक्त में हिंदू संस्कार ही प्रवाहित हो रहे हैं, आज अपने स्वधर्म में वापसी से हमें अत्यंत हर्ष है।

संतों के सानिध्य में विधिविधान से हुई स्वधर्म में वापसी - 35 परिवारों के लगभग 190 लोगो के स्वधर्म वापसी के समय नेमावर के संत श्री रामस्वरूप दास जी शास्त्री और रतलाम के संत श्री आनंद गिरि जी महाराज उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मुंडन, नर्मदा स्नान, यज्ञोपवीत कार्यक्रम तथा हवन संपन्न हुआ। सभी लोग स्वधर्म में वापसी पर आह्लादित दिखे, इनमें लगभग 55 पुरुष, 50 महिलाएं और शेष बच्चे सम्मिलित हैं।

संवर्धिनी चिंतन भारतीय स्त्री का

खरगोन – स्वामी अमृतानंद सेवा न्यास खरगोन के तत्वाधान में संवर्धिनी चिंतन भारतीय स्त्री का महिला सम्मेलन सम्पन्न हुवा।

धार – 'मातृशक्ति संवर्धनी' सम्मेलन संपन्न हुवा, जिसमें धार एवं आसपास के क्षेत्र की 1000 से अधिक मातृशक्ति सम्मिलित हुई।

बड़वानी – जिले की प्रभावी–प्रबुद्ध–सक्रिय–जाग्रत महिलाओ का सम्मेलन हुआ। संवर्धिनी –चिंतन भारतीय स्त्री का के निमित्त हुआ।

आलीराजपुर– प्रांत भर में 'जागृत मातृशक्ति' सम्मेलनों की श्रृंखला में रविवार को आलीराजपुर में 'मातृशक्ति सम्मेलन' का आयोजन हुआ।

उज्जैन– डॉ. हेडगेवार स्मृति न्यास के द्वारा आयोजित संवर्धिनी चिंतन भारतीय स्त्री का का सम्मेलन आयोजित किया गया।

इन्दौर स्थित विश्व प्रसिद्ध

खजराना गणेश मंदिर

अक्टूबर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 02 लाल बहादुर शास्त्री जयंती, गांधी जयंती
ता. 05 वीरांगना रानी दुर्गावती जयंती
ता. 15 शारदीय नवरात्रारंभ
ता. 15 डॉ. ए.पी.ज. अब्दुल कलाम जयंती
ता. 18 विनायकी चर्तुथी व्रत
ता. 21 आजाद हिन्द सेना दिवस
ता. 24 विजयादशमी, दशहरा

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341